

१७ भाष्यतिगु-॥



(योगलभायनमः॥ ॥ नत्वा मन्त्रावयवनावविंदी सा साधानंदं ॥ मिः  
 पसिद्धं ॥ मां ता स्वर्गिं सिध्दा देवा धर्मा ह सा क विहि न स सिप क्क र्वे क १०२१ ॥ ॥  
 थप वक्र मिदि नाप द सा क ग म स र्थ सिध्दं ग म मं स मा सा ग ॥ सा का न वा द दु क्क सा न  
 रु क्का ३१ ॥ १ क लि ग म स द ग ना रु द्द ॥ ३१ व्याप न शा वा व न व द ४२०० दिन सा मा  
 द पि दः क धि ग म स य व ॥ सा सा द पि दः स्व न म न्या दि द्वा १००० सा ना नि रु क्का फ न वि  
 रु क्का ३१ ल ध न ग ० स धि ग म मं ग रु क्का ॥ स र्क दि सं व त्सा न पा व क स्या न र्प ह व पा ॥

पमानं रुषं जहर्नं रुसं क विरुक्क र्वटिका र व कि ॥ १२ ॥ नं क्क न म मा न गे २१  
 नं क्क र्वा १२ यु न न मं विरु क्क म ॥ ल र्वं ग मा र्थ का र्म म ध्वा क्रि क्क पु द म ॥ १३ ॥ म  
 को न जी प क्क य र्गो वि र्व र्क ४२१ य म द व र्वं १०० ग र्गो वि र्व र्क य म र्थ सं ग र्ग व र्क  
 र्वा ५० म दाय नं म र्गि न स फ र्वि म्मा २० ॥ १४ ॥ मं ग र्ग व र्क ५० य न मं र्क  
 म ग र्गो विरु क्क र्क व वा प य र्क ॥ म वा र्गि न गे २२० विरु क्क पु ल द्वा र्क का क्रि य र्वा  
 द य का क्रि या दि न ॥ १५ ॥ स ग र्ग व र्क म द य क न न र्प विरु क्क र्क वा र्गि य म ४५



७  
क

यल्लुव्वं॥ रुकादयेकसदिर्गयकयास्यसा॥ १० विरुक्तापरुलनयका॥ १७ ॥ सखा  
दयाद्यापटिकाप्रकय्यामिषय्याधिका॥ नववसे॥ ११ पुगुर्व्वं॥ नमः॥ रुयादीनदया  
पल्लुव्वं॥ रुकाककुल्यादयर्गविधुर्व्वं॥ १२ ॥ लोपववका॥ १३ दिगुर्व्वं॥ विरुक्तागुर्व्वं॥  
दयार्कहवमीष्टलुग्नं॥ लुग्नययाध्वनसर्व्वं॥ विलुग्नयामिष्टसर्व्वं॥ कथिनामलिद्धि  
४॥ १४ ॥ लकादयेयववदवसाध्वय्याविहर्कमिथया॥ ४ दिगुर्व्वं॥ रुयादीनदया  
याल्लुव्वं॥ नमः॥ रुयादीनदया॥ १२ ॥ नलुव्वं॥ नमः॥ रुयादीनदया॥

१६

विहाजिर्गं॥ लुव्वं॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥  
पुल्लुव्वं॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥  
दम॥ १२ ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥  
धिकादीनदया॥ ११ ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥  
पुल्लुव्वं॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥  
४॥ १४ ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥ रुकादीनदया॥ १० ॥



हास्यमि

डा  
३

॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
स्वप्न १२० मि नरु भवन मुदि ५ सध कुरु कुरु ना लु कुरु वा दाल या भवः  
काचार्य मुनिव सिंदन धम मन या न ध हास्यमि गुरु योगी क धम म धास्य म  
या ह ली ॥ ॥ गुरु गुरु या गुरु ॥ ००० ॥ ॥

१२